CC3 – Concept of Home ManagementDr. Deepika Taterway
Unit 1 : Management as a systemAssistant Professor (Guest Faculty)
(A) Definition of ManagementM. M. C. Patna University, Patna
(B) Definition of Home Management

## 1.Management (प्रबंध )

प्रबंध एक व्यापक शब्द है जिसका उपयोग विभिन्नव्यवसाय एवं औद्योगिक जगत में कई अर्थों में किया जाता है। यह एक मानसिक प्रक्रिया है जो अनिवार्यता प्रत्येकघरों में परिवार के सदस्यों द्वारा संपन्न की जाती है सरल शब्दों में कहा जा सकता है– "प्रबंध का अभिप्राय विचार पूर्व की गई व्यवस्था से है।"

प्रबंध विज्ञान है जिसके अंतर्गत नियोजन,संगठन,समन्वय,क्रियान्वयन,उत्प्रेरण,नियंत्रण तथा मूल्यांकन आदि का वैज्ञानिक विश्लेषण किया जाता है। प्रबंध से तात्पर्य है व्यक्ति के पास जो भी साधन (समय,उर्जा,धन) उपलब्ध होते हैं उनका उपयोग इस तरह से किया जाए कि उससे अधिकतम लक्ष्यों की प्राप्ति हो सके। प्रबंध ना केवल विज्ञान है बल्कि कला भी है जिसके द्वारा किसी भी संस्था (उद्योग,संस्थान,परिवार आदि) के सदस्यों,माल तथा क्रियाओं को नियंत्रित किया जाता है वह इसकी रक्षा हेतु आर्थिक सिद्धांतों की

सहायता ली जाती है।कला का अर्थ सौंदर्य है। संसार के प्रत्येक व्यक्ति में सौंदर्य की अनुभूति तथा प्रवृत्ति किसी ना किसी रूप में अवश्य ही विद्यमान रहती है या एक आंतरिक गुण है जो सभी व्यक्तियों में समान रूप से नहीं पाया जाता है। इन्हीं कारणों से कुछ व्यक्ति सभी साधनों के रहते हुए भी कुशल प्रबंधक नहीं हो पाते हैं जबकि कुछ लोग पर्याप्त साधनों के अभाव में भी कुशल प्रबंधक हो जाते हैं।

प्रबंध को कई विद्वानों ने कई अर्थों में परिभाषित किया है ,जैसे-

Sharma and Kaushikनेप्रबंध के संबंध में लिखा है-

**"Management involves wise use of time, money, energy as well as improved methods in doing household jobs."**

Mac Forland के अनुसार" प्रबंध वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा प्रबंधक विधि पूर्वक, समन्वित एवं सहयोग पूर्ण रवैया अपनाकर मानवीय प्रयासों के माध्यम से शोउद्देश्य संगठनों का सृजन निर्देशन एवं संचालन करते हैं।"

Nickell &Dorsey के अनुसार"The concept management may be said to be planned activity direct towards acomplishing desired ends."

प्रोफेसर आर.सी.डेविस के अनुसार,“प्रबंध कहीं पर भी कार्यकारी नेतृत्व का कार्य है। यह संगठन के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु इसकी क्रियाओं का आयोजन,संगठन तथा नियंत्रण करने का कार्य है।“ इस प्रकार हम पाते हैं कि प्रबंध प्रशासनिकपक्ष है। यह किसी भी संस्थाकी सफलता के लिए परम आवश्यक है।

Home Management(गृह प्रबंध)

गृहप्रबंध संयुक्त शब्द है जो गृह तथा प्रबंध दो भिन्न शब्दों से मिलकर बना है। गृह प्रबंध को भली-भांति समझने के लिए गृह एवं प्रबंध के बारे में जानकारी प्राप्त करना परम आवश्यक है तभी हम गृह प्रबंध को ठीक तरह से समझ सकेंगे। अर्थात घर का तात्पर्य परिवार से होता है जहां हम सुख शांति अमन चैन से रह कर पारिवारिक जीवन व्यतीत करते हैं। साधारण बोलचाल की भाषा में गृहतथा मकान का एक ही अर्थ लिया जाता है। परंतु गृह प्रबंध की दृष्टि से उन दोनों हिस्सों में व्यापकभिन्नताहै। गृहएक भावनात्मक शब्द है जहां परिवार के सभी सदस्य आपस में प्रेम ,करुणा प्यार एवं सहानुभूति सेरहकर अपनी समस्त आवश्यकता की पूर्ति करते हैएवं लक्ष्यों का निर्धारण कर जीवन की गुणवत्ता में वृद्धि करते हैं। परिवार के

सभी सदस्य अपने सुख दुख के क्षणों में एक दूसरे के सहयोगी बनकर,चिंता मुक्त होकर जीवन यापन करते हैं तथा सुख एवं शांति का अनुभव करते हैं। आपसी प्रेम व सहयोग से व्यक्ति कर्तव्यनिष्ठ, परिश्रमी , ईमानदार एवं लगन शील बनकर शारीरिक व मानसिक विकास करते हुए अपने लक्ष्य को प्राप्त करते हैं।

इसके ठीक विपरीत मकान ईट ,चूना, गारा सीमेंट पत्थर तथा मिट्टी से बना हुआ आश्रय स्थल होता है जहां कोई भावनात्मक एवं संवेगात्मक लगाव नहीं होता है। उस मकान को छोड़ने में व्यक्ति को कोई मानसिक वेदना कष्ट एवं क्लेश नहीं होता है बल्कि कभी-कभी बेहद खुशी होती है। उपरोक्त सूक्ष्म विश्लेषण के आधार पर मकान को इसप्रकार- परिभाषित किया जा सकता है किसी भी रहने की सुरक्षित स्थान को मकान कहा जाता है।

गृहशब्द के अंतर्गत परिवार की भौतिक सुख सुविधाओं के साथ-साथ परिवार के मानवीय संबंधों संसाधनों सांस्कृतिक मान्यताओं तक जीवन मूल्यों का भी का विकास होता है। परिवार में रहकर बालक जो सिखता है वह उसके जीवन पर्यंत काम आता है।परिवार के हर एक सदस्यों की शारीरिक मानसिक लैंगिक सामाजिक,आध्यात्मिक,भावनात्मक,संवेगात्मक नैतिक एवं

**चारित्रिक आवश्यकता की पूर्ति होनी आवश्यक है जिससे व्यक्तियों में उनके कर्तव्यों अधिकारों एवं उत्तरदायित्व को समझने की भावना का बेहतर विकास हो सके अर्थात व्यक्ति के संपूर्ण व्यक्तित्व का चहुंमुखी विकास हो सके। और इसके लिए आवश्यक है कि व्यक्ति के सभी जरूरतों की पूर्ति के लिए एक सही प्रबंध का इंतजाम हो।**

**इस प्रकार यह स्पष्ट है कि परिवार के सभी सदस्यों की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए जिस प्रबंध का विचार किया जाता है उसे गृह प्रबंध कहते हैं । सरल शब्दों में प्रबंध एक साधन मात्र है अर्थात हमारे पास जो भी साधन उपलब्ध है उसका सर्वोत्तम उपयोग किस ढंग से किया जाए जिससे हमारी इच्छाएं उद्देश्यों की पूर्ति हो सके।**

**विभिन्न विद्वानों ने विभिन्न तरीकों से विभिन्न अर्थों में गृह प्रबंध को परिभाषित किया है विद्वानों नेइसकी परिभाषा निम्नानुसार दी है–**

**Good Johnson के अनुसार,"Home Management is common in all countries, most common occupation employing most people handling most money and is of fundamental importance for the health of the people."**

**Gross एवं Crandall के अनुसार , "ग्रीनव्यवस्था एक मानसिक प्रक्रिया है जिसमें पारिवारिक साधनों का उपयोग करके आयोजन,नियंत्रण एवं मूल्यांकन के द्वारा पारिवारिक लक्ष्यों की प्राप्ति की जाती है।"**

**National Conference of Family Life की उप समिति के प्रतिवेदनके अनुसार,"गृह व्यवस्था निर्णय करने संबंधी क्रियाओं कीश्रृंखला है जिसमें पारिवारिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए पारिवारिक साधनों के प्रयोग की प्रक्रिया सम्मिलित है। गृह प्रबंध पारिवारिक जीवन का एक आवश्यक अंग है।"**

**Irene Oppenheim के अनुसार, "Management of the home is rooted in the culture. There are vast differences in this way home responsibility are managed in different culture. Even within a culture there is a considerable variation. "**

**राजमलपी.देवदास ने गृह प्रबंध को इस प्रकार परिभाषित किया है–"गृह व्यवस्था एक बांध के समान है जिसमें साधनों को नियमित किया जाता है।"जिस प्रकार बांध बनाकर वर्षा से प्राप्त जल को एकत्रित किया जाता है और फिर पूरे वर्ष नगर वासियों को नियमित जलापूर्ति की जाती है तथा खेती बाड़ी का कार्य किया जाता है जिससे अन्य जल संकट उत्पन्न नहीं होता है ठीक उसी प्रकार की व्यवस्था में साधनों (समय,**

धन,ऊर्जा,भौतिक वस्तुएं) कोबांध के रूप में एकत्रित किया जाता है तथा इसकी सहायता से परिवार के प्रत्येक सदस्यों के लक्ष्य एवं उद्देश्य की पूर्ति की जाती है।

उपरोक्त परिभाषा ओं के आधार पर निश्चित तौर से यह कहा जा सकता है कि गृह प्रबंध एक मानसिक प्रक्रिया है जिसका अर्थ केवल किसी कार्य को निष्पादित करना या पूरा करना हीनहींहोता है बल्कि यह अत्यंत सूछ्म निपुणता एवं कुशलता पूर्वक बनाई जाने वाली योजना है जिसमें पारिवारिक साधनों का उपयोग परिवार के सदस्यों के लक्ष्यों की पूर्ति के लिए किया जाता है ताकि उन्हें अधिकतम लाभ एवं संतुष्टि मिल सके। यद्यपि गृह प्रबंध एक आंतरिक गुण है जो सभी व्यक्तियों में समान रूप से विद्यमान नहीं रहता है परंतु इस उसे अर्जित किया जा सकता है। निरंतर श्रम मेहनत अनुभव परामर्श शिक्षा आदि गुणों को अपनाया जा सकता है। वर्तमान परिपेक्ष में जहां समय के मूल्यों में काफी वृद्धि हुई है नए नए तकनीक एवं समय श्रम ऊर्जा बचत करने वाले उपकरणों में वृद्धि हुई है वह गृह प्रबंध का महत्व और भी अधिक बढ़ाहै।

संदर्भ :- सिंह, डॉवृंदा;गृह प्रबंध एवं आंतरिक सज्जा ; पंचशील प्रकाशन, जयपुर।